थनैला रोग (मैस्टाइटिस)

कारण

थन के छिद्रों में जीवाणुओं के प्रवेश करने से यह रोग होता है। इस रोग में पशु की गादी (अयन) व थन प्रभावित होते हैं।

लक्षण

- गादी (अयन) में सूजन आ जाना
- गादी का रंग लाल व छूने पर गर्म महसूस होना
- पशु को हल्का बुखार होना
- दूध निकालते समय थनों में कड़ापन महसूस होना
- गादी व थन को छूने पर पशु को पीड़ा होना
- दूध में सफेद लम्बी कीलें, फटे दूध की तरह छिछड़ेदार दूध व साथ ही खून के थक्के आना, दूध में कमी होना
- अयन व थनों में गांठों का बनना

बचाव व उपचार

दुधारू पशु के दूध की जाँच समय पर करवा कर जीवाणुनाशक औषधियों द्वारा उपचार पशुचिकित्सक द्वारा करवाना चाहिए।

- पशुशाला को प्रतिदिन दो बार डिटर्जेन्ट या फिनाइल के पानी से धोयें
- दूध दुहने से पहले व बाद में थनों को हल्के लाल दवा के घोल से धोयें
- रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें
- रोगी पशु का दूध उपयोग में नहीं लेवें
- दूध की धार कभी भी फर्श पर न मारें
- स्वस्थ पशुओं के दोहन के बाद ही रोगी पशु को दुहना चाहिये
- दूध निर्धारित समय पर व सही विधि से निकालें तथा अधिक समय तक थनों में दूध नहीं छोड़ें

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.)
(राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय)
एन.एच. 11, आगरा रोड़, जामडोली, जयपुर-302031